समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

• प्रकाशन दिनांक : १५ जून २०२३ • वर्ष : २६ • अंक : १२ (निरंतर अंक : ३१२) • भाषा : हिन्दी • पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

ड्रामेबाज क्या बतायेंगे कि बापूजी क्या हैं, उसका बयान तो हमारी अनुभूतियाँ करेंगी और कितना भी बयान करें, वह उस दिव्यता के सागर की एक प्याली भी नहीं होगी...

...आप इसका एक आचमन ही ले लो, वह आपको भी दीवाना बना देगा और आपका दिल भी गुनगुनाने लगेगा कि बापूजी क्या हैं ।

शिष्यों के महापर्व गुरुपूर्णिमा के पावन अवसर पर प्रस्तुत है उनके जीवन में छलकते गुरुकृपा के अनुभव-उल्लास की एक झलक...

ॐ

अनुभव विशेषांक

गुरु का ज्ञान, गुरु का द्वारा । आनंद, शांति, मोक्ष आधारा ।।

बापूजी के खिलाफ जो केस किया गया है वह १०० प्रतिशत बोगस है । सभीको एकजुट होकर बापूजी के साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए । १२

- श्री सियावल्लभदासजी महाराज, अयोध्या

जिन्होंने विश्वभर में सनातन धर्म की ध्वजा लहरायी और अपना जीवन लोकोत्थान के लिए समर्पित किया ऐसे महान संत के साथ आज जो हो रहा है उसे देखकर बड़ी पीड़ा होती है । १२

- स्वामी रामकृष्ण आचार्य, उज्जैन

नारकीय जीवन से उबारकर भक्ति की राह दिखायी ९ | जीवन आपका, जीवन-दिशा भी आपकी ११

महापुरुषों की कृपा की

रसमय-आनंदमय प्रेरक अनुभूतियाँ

इतिहास उठाकर देखें तो पता चलता है कि दुःख, शोक, भय, चिंता, राग, द्वेष, अशांति और उद्वेग की आग में झुलसते समाज को जब-जब अमिट सुख, निर्भयता, निश्चिंतता, अद्वैत माधुर्य का प्रसाद मिला है तो वह ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों के द्वारा ही मिला है और तब ही समाज की वास्तविक उन्नति, वास्तविक कल्याण हुआ है।

आत्मसम्पदा के धनी, आत्मसुख में परितृप्त, अज्ञान-अंधकार का नाश करनेवाले, प्राणिमात्र के परम सुहृद इन महापुरुषों के दर्शन, सत्संग, मार्गदर्शन से जीवन की जो मुख्य माँग है - 'सभी दुःखों की आत्यंतिक निवृत्ति और परमानंद की प्राप्ति' वह सहज में पूरी होने लगती है और चाहे रोगी हो या स्वस्थ, निर्धन हो या धनी, पापी हो या पुण्यात्मा, भक्त हो या अभक्त, संसारी हो या विरक्त - सभीका जीवन ऊँचा उठने लगता है। सज्जन तो धर्मात्मा बनते हैं, पापी-से-पापी व्यक्ति भी दुष्कृत्यों का त्याग कर सत्प्रवृत्तियों का आश्रय ले के सच्चे सुख को पाने की राह पर चलने लगता है।

समाजोद्धारक महापुरुषों की शृंखला में वर्तमान कड़ी हैं योग-सामर्थ्य के धनी, अहैतुकी करुणा-कृपा बरसानेवाले ब्रह्मवेत्ता पूज्य संत श्री आशारामजी बापू। आपश्री ने सत्संग द्वारा वेदांत-ज्ञान तो दिया ही, साथ ही ध्यान योग शिविरों में कुंडलिनी शक्तिपात द्वारा लाखों-लाखों लोगों को साधना में विलक्षण उड़ान भरवायी। देश-विदेश में ४३२ आश्रमों की स्थापना करवायी और उनमें मौन-मंदिर बनवाये, जिनमें साधना एवं मंत्र-अनुष्ठान करनेवाले साधकों को दिव्य अनुभूतियाँ होती हैं। (कुछ अनुभूतियाँ पढ़ें 'रसमय योगयात्रा' भाग-१ पुस्तक में।)

पूज्यश्री की ब्रह्मानुभवसम्पन्न ओजपूर्ण वाणी जिनके भी कानों में पड़ी है उनके जीवन ने करवट ली है। कोई पूज्यश्री से स्वप्न में अथवा ध्यान में प्रेरणा पाकर रोग, चिंता से मुक्त हो जाता है तो कोई पूज्यश्री के श्रीचित्र के आगे आर्त भाव से पुकारने पर अपनी समस्या का समाधान पा लेता है। संतश्री के कृपा-प्रसाद से असंख्य लोगों के बिगड़े काज सँवरे हैं। बापूजी की कृपा से लोगों को जो लौकिक-अलौकिक अनुभूतियाँ हुई हैं उन्हें यदि लिपिबद्ध किया जाय तो एक-दो नहीं, कई ग्रंथ तैयार हो जायेंगे और फिर भी अनुभूतियों के अथाह सागर की थाह वे नहीं ले पायेंगे। इस पुस्तिका में भक्तों के अनुभवों की बगिया से चुने हुए थोड़े-से पुष्प एकत्र किये हैं।

भारत के महापुरुषों द्वारा निर्दिष्ट कल्याणकारी साधना-पद्धति की प्रामाणिकता और दिव्यता की महक दिलानेवाले इन अनुभवों को पढ़िये-पढ़ाइये तथा अपना व दूसरों का जीवन भी रसमय, आनंदमय एवं मंगलमय बनाइये।

लोक कल्याण सेतु

मासिक प्रकाशन

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २६ अंक : १२ (निरंतर अंक : ३१२)
प्रकाशन दिनांक : १५ जून २०२३ मूल्य : ₹ ४.५०
पृष्ठ संख्या : २६ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
राकेशसिंह आर. चंदेल
प्रकाशन-स्थल :
संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण-स्थल :
हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) -१७३०२५.
सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

*Email: lokkalyansetu@ashram.org, ashramindia@ashram.org
*Website: www.lokkalyansetu.org www.ashram.org

लोक कल्याण सेतु' रुद्राक्ष मनका योजना

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹ ४५	(१) पंचवार्षिक :	US $५०
(२) द्विवार्षिक :	₹ ८०	(२) आजीवन :	US $१२५
(३) पंचवार्षिक :	₹ १९५		
(४) आजीवन :	₹ ४७५		

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

- अपने अनुभव का आदर कर लो तो.....४
- गुरुवर की योगशक्ति अपार..... ६
- साथ हों महाकाल तो कैसे गलेगी काल की दाल !.....८
- गुरुकृपा ने दिलायी मृत्यु पर विजय.....१०
- नारकीय जीवन से उबारकर भक्ति की राह दिखायी.....११
- आशाराम बापू के साथ न्याय होना चाहिए – श्री कमलेश शास्त्रीजी..... १२
- शांति-आनंददायी अलौकिक अनुभूतियाँ..... १३
- जीवन आपका, जीवन-दिशा भी आपकी..... १४
- तो भारत का नक्शा कुछ और ही होता ! – श्री सियावल्लभदासजी.....१६
- बापूजी के प्रभाव से २२ वर्ष से ब्रह्मचर्य-व्रत.....१८
- स्वास्थ्यप्रद नींबू का करें सेवन.....१९
- सारस्वत्य मंत्र की दीक्षा से हुआ प्रतिभा का विकास..... २१
- महापाप से बचाया, महापुण्य का अवसर पाया.....२३
- इससे निश्चितरूप से समाज की क्षति होगी – स्वामी दिव्यानंदजी महाराज..... २४

* 'अनादि' चैनल टाटा स्काई/प्ले (चैनल नं. ११७०) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबलों पर उपलब्ध है।
* 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है।

* विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग *

अनादि TV
रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे

DIGIANA DIVYA JYOTI
रोज रात्रि १०-०० बजे

Asharamji Bapu

सेवाकार्य भी
Asharamji Ashram

Mangalmay Digital

आश्रम के आधिकारिक यूट्यूब चैनल्स

पूज्य बापूजी के जीवन के मधुर संस्मरण

गुरुवर की योगशक्ति अपार, सँवर जाते सबके बिगड़े काज

ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों के संकल्प में अद्भुत सामर्थ्य होता है। सत्स्वरूप परमात्मा में विश्रांति पाये हुए ऐसे संत जो संकल्प करते हैं वह पूरा होता ही है। प्रस्तुत हैं योग-सामर्थ्य के धनी ब्रह्मवेत्ता संत पूज्य बापूजी के जीवन के कुछ ऐसे प्रसंगों के मधुर संस्मरण :

...और सारा वातावरण जयघोषों से गूँज उठा

पानीपत (हरियाणा) निवासी बहन **कमलेश चुघ** बताती हैं कि मैं अप्रैल १९९७ में सोनीपत में पूज्य बापूजी के दर्शन करने गयी थी। एक बहन अपने पति और अपनी बेटी के साथ वहाँ आयी थी। गुरुदेव के चरणों में प्रार्थना करते हुए बोली : ''बापूजी ! हमारी बेटी जन्म से गूँगी है। इसका इलाज कराने के लिए हमने पूरी सम्पदा बेच दी है पर यह ठीक नहीं हुई। कृपा करके आप ही कुछ रास्ता दिखाइये।''

बापूजी ने थोड़ी देर आँखें बंद कर लीं, फिर कहा : ''आप लोग कहते हैं कि यह बोल नहीं सकती पर मैं यदि कहूँ कि यह बोलेगी तो आप मुझे क्या देंगे ?''

''बापूजी ! आप जो माँगेंगे वह देंगे।''

गुरुदेव विनोदभरे स्वर में बोले : ''मैं सवा रुपया लूँगा।'' और उस लड़की पर दृष्टि डाली तो जो जन्मजात गूँगी थी वह एकाएक बोल पड़ी : ''बापूजी ! बापूजी !...''

पूज्यश्री : ''अरे, तू तो बिल्कुल ठीक है !''

उसका बोलना चालू हुआ और माता-पिता के प्रेमाश्रु बहकर मानो गुरुदेव के श्रीचरणों को पखारने लगे। सारा वातावरण 'सद्गुरुदेव भगवान की जय !' के जयघोषों से गूँज उठा।

'क्यों रे ! तू फल देगा कि नहीं ?'

पानीपत निवासी **राममेहर सिंह** बताते हैं कि जून १९९७ में पानीपत आश्रम का निर्माण-कार्य चल रहा था। उन दिनों पूज्य बापूजी वहाँ पधारे। मंडप बनाने हेतु जो भाग निर्धारित किया था उसके अंतिम छोर पर एक आम का वृक्ष था। समितिवालों ने श्रीचरणों में निवेदन किया : ''बापूजी ! यह पेड़ बूढ़ा हो चुका है, कई वर्षों से इस पर कोई फल नहीं लगा है। यदि इसको काट देंगे तो मंडप बड़ा बन सकता है। आगे आपश्री की जैसी आज्ञा हो।''

बापूजी कुछ क्षणों के लिए शांत हो गये फिर आम के पेड़ की तरफ इशारा करते हुए बोले : ''क्यों रे ! तू फल देगा कि नहीं ?'' थोड़ी देर बाद हमसे कहा : ''इसे काटना नहीं, इसमें खाद-पानी डालना। देखना, यह फल देगा।''

साथ हों महाकाल तो कैसे गलेगी काल की दाल !

- मोनिका शर्मा
सचल दूरभाष : 8860014691

उठ ! अभी तेरा समय नहीं हुआ है

सन् २००० में मैं अपनी बहन के साथ अहमदाबाद आश्रम गयी थी। हम पूज्य बापूजी के दर्शन करने गये। गुरुदेव बोले : ''तुम्हारे पिताजी कैसे हैं ?''

हमने बोला : ''बापूजी ! पिताजी तो ठीक हैं।''

पूज्यश्री ने हमें प्रसाद दिया और कहा : ''यह अपने पिताजी को दे देना।''

गुरुदेव ने पिताजी को याद किया यह बताने के लिए हमने घर पर फोन किया तो पता चला कि उन्हें ब्रेन हेमरेज, हार्ट अटैक और लकवा (paralysis) - तीनों एक साथ हुए हैं और वे आई.सी.यू. में भर्ती हैं। हम समझ गये कि शायद इसलिए गुरुदेव ने हमें वह प्रसाद दिया है। हमने आश्रम के बड़ बादशाह का जल व मिट्टी ली और घर पहुँचे।

अस्पताल गये तो डॉक्टर ने बताया कि ''आपके पिताजी को होश में आने में कम-से-कम १ हफ्ता लग जायेगा, उनकी हालत बहुत गम्भीर है।''

हम आई.सी.यू. में गये और पिताजी के बिस्तर के पास पूज्यश्री के करकमलों से मिला हुआ प्रसाद रखा, बड़ बादशाह की मिट्टी का तिलक लगाया और बड़ बादशाह का जल उनके चारों ओर छिड़का। और हुआ यह कि २ घंटे बाद उन्हें होश आ गया।

डॉक्टर अत्यंत विस्मित हो के बोले : ''इनका इतनी जल्दी होश में आ जाना यह किसी चमत्कार से कम नहीं है !''

पिताजी ने हमें बताया कि ''मुझे ऐसा लगा कि किसीने मुझे झटका मारा। हलका-सा होश आया। कोई बोल रहा था : ''अरे, उठ ! अभी तेरा समय नहीं हुआ है। उठ जा, खड़ा हो जा !'' पता नहीं अचानक मुझमें कहाँ से हिम्मत आयी, मैं उठा और देखा तो वह कोई व्यक्ति नहीं, साक्षात् बापूजी हैं। मैं कुछ बोल नहीं पाया, बस आँखों से आँसू बह रहे थे, मैं गुरुदेव को एकटक देख रहा था। थोड़ी देर में बापूजी अंतर्धान हो गये।''

हम सभीकी आँखें भर आयीं कि 'कैसे भक्तवत्सल हैं गुरुदेव, जो अपने शिष्यों का इतना खयाल रखते हैं !' सचमुच, बापूजी शरीर तक सीमित नहीं हैं, ब्रह्मस्वरूप हैं, घट-घटवासी हैं।

'जिसका इष्ट मजबूत होता है उसका अनिष्ट नहीं होता।' गुरुदेव के सत्संग के इन वचनों का

नारकीय जीवन से उबारकर

भक्ति की राह दिखायी

- निरंजन कंजर

सचल दूरभाष : ७९७४१०३७२५

शराब पीना, मांसाहार करना, चोरी करना, लोगों को लूटना यही मेरी जीवनचर्या थी । मुझे एक मर्डर केस के तहत आजीवन कारावास की सजा हो गयी । कुछ समय बाद मुझे पैरोल मिला । जेलर बापूजी से मंत्रदीक्षित था, उसने मुझसे कहा : ''तू बापूजी के दर्शन करने जाना, उनके आशीर्वाद से कई कैदियों की जमानत हुई है।''

भोपाल सेंट्रल जेल के पास में ही बापूजी का आश्रम है, जेल से निकलकर मैं सीधा आश्रम पहुँचा । पता चला कि बापूजी हरिद्वार में हैं तो वहाँ गया । बापूजी के दर्शन करते ही मन के विचार बदल गये । मुझे अपने पूर्व-जीवन पर पश्चात्ताप होने लगा । मैंने श्रीचरणों में प्रार्थना की :

''बापूजी ! कुछ साल पहले मुझसे मर्डर हो गया था । मुझे अपनी भूल का प्रायश्चित करना है । रिहाई हो जाय ऐसी कृपा कीजिये।''

बापूजी बोले : ''पवन तनय बल पवन समाना । बुधि बिबेक बिग्यान निधाना ।। इस मंत्र का जप करना और मंत्रदीक्षा ले के जाना।'' मैंने बापूजी से दीक्षा ले ली । पैरोल का समय पूरा होने पर जेल में आया तो ध्यान, जप में ही समय बिताने लगा । २००२ में मेरी सजा को साढ़े दस वर्ष ही हुए थे और मैं रिहा हो गया ।

बापूजी की कृपा से मेरा जीवन तो उन्नत हुआ, मैं जिस समाज में रहता था वहाँ के लोग भी डकैती, लूटपाट छोड़ के सज्जन, धर्मात्मा हो गये । लगभग ५०० लोगों को पूज्य बापूजी से दीक्षा लेने का सौभाग्य भी मिला ।

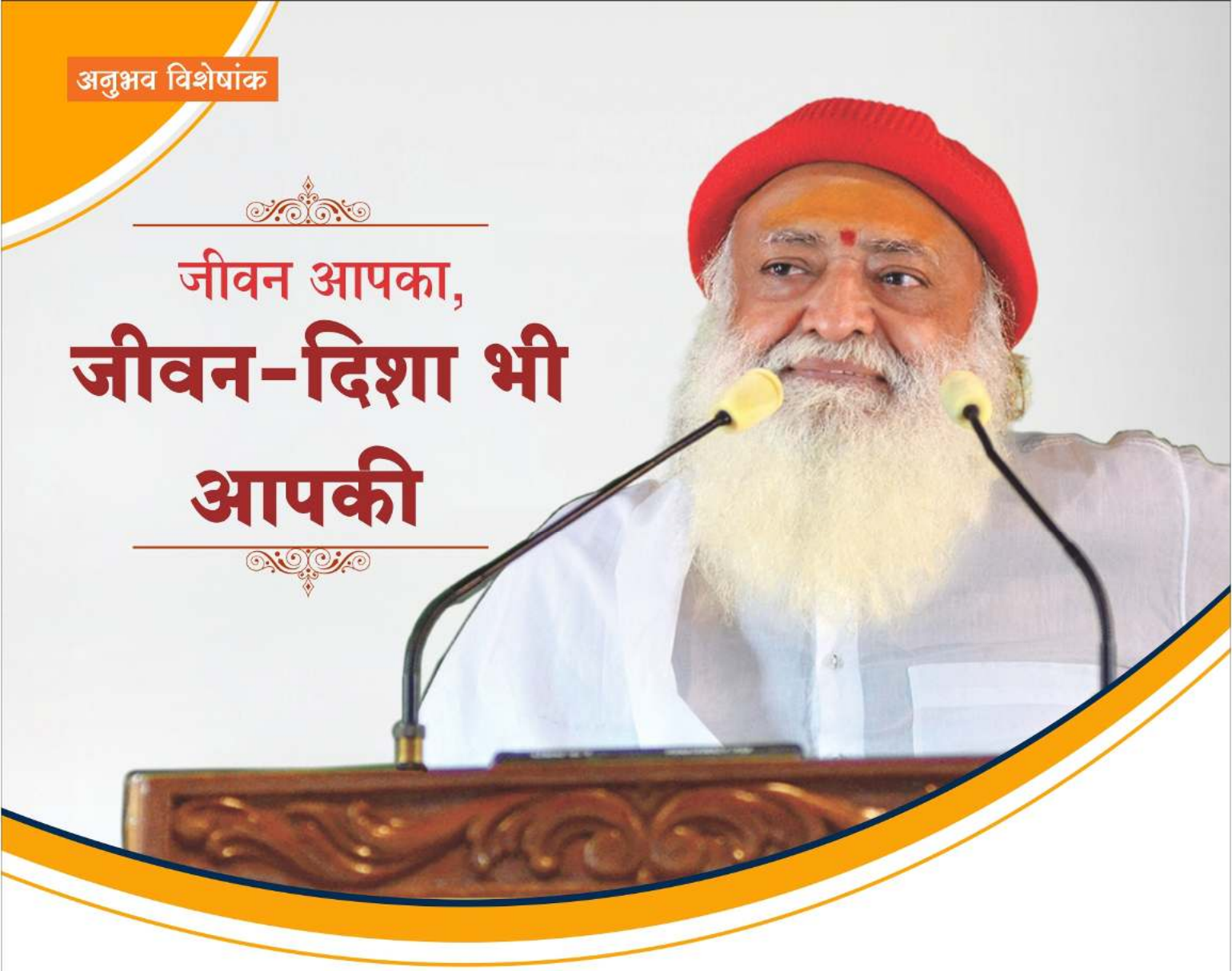

जीवन आपका, जीवन-दिशा भी आपकी

संत आशारामजी बापू के बारे में कुछ-का-कुछ सुनने में आता है लेकिन फिर भी उनको जानने-माननेवाले लोगों पर उसका कुछ असर नहीं पड़ता, उलटा नये-नये लोग उनसे जुड़ते जा रहे हैं, क्या कारण है इसका ?' यह प्रश्न आज बहुत-से लोगों के हृदय में उठता है।

भाई ! शांति की, बुराईरहित निर्दुःख जीवन की, सच्चे सुख की, उत्तम स्वास्थ्य की किसकी माँग नहीं है ? सभीकी है। इस माँग की पूर्ति बापूजी से होती है। जिन्होंने पूज्य बापूजी के सत्संग-सान्निध्य या दीक्षा का लाभ लिया है उन्होंने ऐसा कुछ पाया है कि उन्हें किसीके प्रमाणपत्र की जरूरत नहीं है, उनका खुद का अनुभव उनके लिए पर्याप्त है।

कोई कहे कि हम ये सब नहीं मानते, इसका क्या प्रूफ है ? आपको करोड़ों-करोड़ों लोगों का प्रत्यक्ष अनुभव सच्चा नहीं लगता तो कोई बात नहीं, आप विज्ञान की बात को तो मानते हैं न ? तो सुन लीजिये विज्ञान क्या कहता है।

विश्वप्रसिद्ध आभा विशेषज्ञ (aura specialist) **डॉ. हीरा तापड़िया** कहते हैं कि ''मैंने बापूजी का आभा-चित्र खींचा तो बापू की आभा देखकर मुझे सबसे ज्यादा आश्चर्य हुआ। उनकी आभा से ज्ञात हुआ कि वे कम-से-कम पिछले लगातार १० जन्मों से समाजसेवा का यह आध्यात्मिक कार्य करते आ रहे हैं - लोगों पर शक्तिपात करके उन्हें अध्यात्म में लगाना, स्वस्थ करना, समाज की बुराइयों को दूर करना, ज्ञानामृत

स्वास्थ्यप्रद

नींबू

का करें सेवन

पायें वर्षा ऋतु में होनेवाली समस्याओं से छुटकारा

वर्षा ऋतु (२१ जून से २३ अगस्त) में पाचनशक्ति स्वाभाविक ही मंद रहती है और वायु का प्रकोप भी होता है। नींबू जठराग्निवर्धक, आमपाचक और वायुशामक गुणों से युक्त होने के कारण इस ऋतु में होनेवाली विभिन्न प्रकार की समस्याओं में लाभदायी है। यह उत्तम पित्तशामक होने के साथ मंदाग्नि, अजीर्ण, पेटदर्द, उलटी, कब्ज, हैजा (cholera) आदि पेट के रोगों के लिए उत्तम औषधि है। यह अम्ल रस युक्त (खट्टा) होने पर भी पेट में जाने के बाद मधुर हो जाता है। सुबह खाली पेट नींबू का रस पानी में मिलाकर पीने से आँतों में संचित विषैले पदार्थ नष्ट हो जाते हैं, रक्त का शुद्धीकरण होता है तथा मांसपेशियाँ सशक्त होती हैं। इससे शरीर में स्फूर्ति व ताजगी आती है। विटामिन 'सी' का उत्तम स्रोत होने से रोगप्रतिकारक शक्ति (immunity) बढ़ाता है।

औषधीय प्रयोग

* १ गिलास गुनगुने पानी में १ नींबू का रस एवं २ चम्मच शहद* डालकर पीने से मोटापा व पुराना कब्ज मिटता है।

परम मंगलमय सत्साहित्य पंचामृत, व्यासपूर्णिमा

'पंचामृत मेरा हृदय है।' - पूज्य बापूजी

इसमें आप पायेंगे : ✲ क्यों आवश्यक है ब्रह्मचर्य-पालन ? ✲ तन-मन को स्वस्थ कैसे रखें ? ✲ ईश्वर-साक्षात्कार का सबसे सरल मार्ग क्या है ? दैनिक जीवन-व्यवहार की थकान और तनाव दूर कर कैसे पायें विश्रांति ? ✲ धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष प्रदायक स्तोत्र ✲ जीते-जी मृत्यु की यात्रा कराके वैराग्य जगानेवाली श्मशान-यात्रा ✲ गुरुपूर्णिमा का माहात्म्य, विधि आदि ✲ साधना में तीव्र उड़ान हेतु बोधप्रद प्रेरक प्रसंग

सस्ता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य, पढ़िये-पढ़ाइये अवश्य !

स्मृतिवर्धक, रक्तशुद्धिकर व विविध रोगों में लाभदायी

तुलसी अर्क

तुलसी अर्क स्मृति, सौंदर्य व बल वर्धक तथा कीटाणु और विष नाशक है। यह हृदय के लिए हितकर तथा ब्रह्मचर्य-पालन में सहायक है। यह रक्त में से अतिरिक्त स्निग्धांश (LDL) को हटाकर रक्त को शुद्ध करता है। सर्दी-जुकाम, खाँसी, बुखार, दस्त, उलटी, हिचकी, दमा, मुख की दुर्गंध, मंदाग्नि, पेचिश, कृमि, स्मृतिह्रास आदि रोगों में लाभदायी है।

पुदीना अर्क

यह पाचक, रुचिकारक, भूखवर्धक, स्फूर्तिदायक व चित्त को प्रसन्न करनेवाला है। पेट के विकारों, जैसे - अरुचि, भूख न लगना, अजीर्ण, अफरा (gas), उलटी, दस्त, हैजा एवं कृमि में यह विशेष उपयोगी है। बुखार, खाँसी, सर्दी-जुकाम, मूत्राल्पता तथा श्वास व त्वचा-रोगों में भी लाभदायी है।

स्पेशल मालिश तेल

यह तेल जोड़ों के दर्द के लिए अत्यंत उपयुक्त है। अंदरूनी चोट, पैर में मोच आना आदि में हलके हाथ से मालिश करके गर्म कपड़े से सेंकने पर शीघ्र लाभ होता है।

अमृत द्रव

यह एक बहुत ही असरकारक औषधि है। इसके प्रयोग से सर्दी-जुकाम, खाँसी, सिरदर्द तथा गले एवं दाँतों के रोगों में लाभ होता है। संक्रमण से रक्षा हेतु इसकी कुछ बूँदें कपड़े या रूई के फाहे पर ले के सूँघें।

१००% शुद्ध संजीवनी शहद

खनिज तत्त्वों एवं विटामिन्स से भरपूर यह शहद एक प्राकृतिक संजीवनी है। इसका प्रतिदिन सेवन करने से शारीरिक शक्ति का विकास होता है तथा उत्तम स्वास्थ्य एवं सुंदरता की प्राप्ति होती है।

घृतकुमारी रस (Aloe vera juice)

ऑरेंज फ्लेवर में

यह विविध त्वचा-विकारों, पीलिया, नेत्र व स्त्री रोगों, आंतरिक जलन आदि में लाभदायी है। त्रिदोषशामक, जठराग्निवर्धक एवं यकृत (liver) के लिए वरदानरूप है।

लीवर टॉनिक सिरप व टेबलेट

सभी प्रकार के यकृत-विकार (liver disorders), खून की कमी, पीलिया, रक्त-विकार, कमजोरी, भूख न लगना, अरुचि, कब्ज, पेटदर्द तथा गैस में अत्यधिक लाभप्रद।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

विद्यार्थी शिविरों द्वारा बँट रहा वैदिक संस्कृति का प्रसाद

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2021-2023
Issued by SSPO's-AHD
Valid upto 31-12-2023

WPP No. 02/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

राजनांदगाँव (छ.ग.)

गाजियाबाद (उ.प्र.)

तलवाड़ा (पंजाब)

आगरा

पंचेड़ (म.प्र.)

धौली-भुवनेश्वर

दोलवण, जि. तापी (गुज.)

बेलौदी, जि. दुर्ग (छ.ग.)

कांजन, जि. वलसाड (गुज.)

धमतरी (छ.ग.)

कटक (ओड़िशा)

पुणे

शेरकोटला-कठुआ (जम्मू-कश्मीर)

जोधपुर

कवर्धा (छ.ग.)

पाचोरा, जि. जलगाँव (महा.)

सोनई डोंगरी, जि. बालोद (छ.ग.)

बेमेतरा (छ.ग.)

जबलपुर (म.प्र.)

योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रम द्वारा सुसंस्कार-सिंचन

चंडीगढ़

बांडीगाँव, जि. कालाहांडी (ओड़िशा)

गुड़ा मुंडिया, जि. कठुआ

मिहिजाम, जि. जामताड़ा (झारखंड)

कुरुक्षेत्र (हरि.)

टप्पल, जि. अलीगढ़ (उ.प्र.)

शाहपुर, जि. जम्मू

मौली जागरां, जि. चंडीगढ़

पंचकुला (हरि.)

कैथल (हरि.)

लखनऊ

जींद (हरि.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन लोक कल्याण सेतु, ऋषि प्रसाद व ऋषि दर्शन की सदस्यता हेतु स्कैन करें :

Lok Kalyan Setu | Rishi Prasad | Rishi Darshan

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम प्रकाशक और मुद्रक : राकेशसिंह आर. चंदेल प्रकाशन-स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) मुद्रण-स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी